भूसामण्डी, हाथीखाना, लखनऊ.
३०-३-४२

प्रियवर जगद्दास जी,

आपका कृपापत्र मिला। मैंने आपसे कहा था, मैं गुजराती पढ़ना चाहता हूँ, काका साहब की कोई पुस्तक जो मूल गुजराती में हो, भेज दें, और एक अच्छा मासिक पत्र; मैं पूरा मूल्य चुका दूँगा। बड़ा अच्छा हो यदि काका साहब से पूछकर शब्द और क्रिया के रूप-काल संक्षेप में लिखकर भेज दें, साथ अन्य आवश्यक बातें। बम्बई के एक गुजराती मित्र से दो पुस्तकें मैंने मँगाई हैं।

मैं एक उपन्यास में उलझा हूँ, छप रहा है। मौसिम अच्छा है। श्रीमान काका साहब से मेरा प्रणाम कहें, स्वयं स्नेह लें, समाचार पुस्तकों के साथ अवश्य भेजें। इति।

आपका

"निराला"